श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये — श्री शत्रुंजय-मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका फरवरी - २०२०

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ९ शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान	
(१)	खजाना
(२)	विश्व
(३)	अचल
(४)	व्युत्पत्ति
(५)	तीर्थ
(६)	क्षेत्रदार
(७)	मार्गदर्शन
(८)	द्रव्य
(९)	अहोरात्रि
(१०)	भे
(११)	आत्मसात
(१२)	लोकावधिज्ञान
(१३)	देह
(१४)	बैल
(१५)	निंदा
(१६)	सिद्ध
(१७)	चंडकौशिक
(१८)	रोग
(१९)	भाषा शुद्धि
(२०)	सारभूत

प्रश्न-२ एक ही शब्द में	
(१)	केवलज्ञानी भगवंत
(२)	आलंभिका नगरी
(३)	अभयकुमार
(४)	नवकार महामंत्र
(५)	नपुंसक लिंग
(६)	सिद्ध
(७)	शुक्ल पक्ष
(८)	मरण
(९)	आधी आधी
(१०)	सिंह
(११)	देवलोक
(१२)	मृगावती
(१३)	सिद्धशिला
(१४)	नरक
(१५)	गुण

प्रश्न-३ शब्दार्थ	
(१)	दर्शन
(२)	प्राण
(३)	गति
(४)	आज्ञा दीजिए
(५)	~~संज्ञी~~ सांढि
(६)	नव तत्व
(७)	अपराध को
(८)	लोकाग्रे
(९)	पृथ्वीकाय
(१०)	प्ररूपणा
(११)	यथाख्यात
(१२)	चारित्र
(१३)	जो कुछ
(१४)	विकलेन्द्रिय
(१५)	७-८ भव
(१६)	व्यतीत हुआ
(१७)	विद्यमान
(१८)	दो
(१९)	लेश्या
(२०)	भुजपरिसर्प

प्रश्न-४ जोड़ियाँ लगाओ			
(१)	5	(६)	3
(२)	7	(७)	4
(३)	9	(८)	1
(४)	8	(९)	6
(५)	10	(१०)	२

प्रश्न-५ संख्या में जवाब	
(१)	१०८
(२)	६
(३)	१०
(४)	१६
(५)	३३
(६)	२१
(७)	३
(८)	६२
(९)	७२ लाख
(१०)	७

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	११
(२)	×	(२)	१६
(३)	×	(३)	६
(४)	✓	(४)	३
(५)	×	(५)	१३
(६)	×	(६)	९
(७)	×	(७)	१८
(८)	✓	(८)	७
(९)	✓	(९)	२६
(१०)	×	(१०)	१२

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-८ मिले हुए गुण	= कुल गुण

जांचनेवाले की सही ______

रीमार्क ______

प्रश्न - ८

१. पृथ्वीकाय की उत्कृष्ट आयु बावीस हजार वर्ष है अपकाय का आयुष्य सात हजार वर्ष है। वायुकाय का आयुष्य तीन हजार वर्ष है। प्रत्येक वनस्पतिकाय का आयुष्य दश हजार वर्ष का है तेउकाय का आयुष्य तिन हजार वर्ष है। इस गाथामें जो उत्कृष्ट स्थिति कही है वह निरुपद्रव्य स्थानमें रहे जिवों की है। जिसस्थान मे उन्हे आघात, प्रत्याघात के निमित्त न मिलते हो, सामान्यतः मध्यम कक्षा के आयुष्य वाले जीव ही ज्यादा होते हैं।

२. प्रभु महावीर के मुख्य साध्वीजी थे, चंदनबाला इनकी शिष्या मृगावती थी। उपाश्रयमें लोटने में विलंबहुआ गुरु चंदनबालाने कठोर की की "तुम्हारी जैसी कुलीन साध्वीजी को विलंब करना योग्यनही" तेजी को टकोर काफी होती है, (समझदार को इशारा) ही काफी होता है मृगावती विचार करने लगी. मै कैसी हूं? मैने गुरु भगवंत को संताप पहुंचाया, उनकी साधनामे अवरोध खडा किया इस तरह पश्चातांप की धारा में कर्म धोकर आत्मा उज्वल हो गयी, घाती कर्मो का नाशहुआ और केवलज्ञान की प्राप्ती हुई। अपने जिवन को विनय से भरपूर बनायेंगे तभी सभी सिद्धीयॉ प्राप्त होती हैं।

३. सुदेव सुगुरु, सुधर्म को स्वीकारना और कुदेव, कुगुरु, कुधर्म को त्यागने की भावना की जाती है। ऐसा करनेसे ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना सुंदर रूपसे हो और उसके लिए ज्ञान, दर्शन-चारित्र की विराधना त्यागना चाहिये। मनोगुप्ति, वचनगुप्ति कायगुप्ति, स्वीकारना चाहिये। मनदंड, वचनदंड, कायदंड त्यागना चाहिये, ऐसी भावना व्यक्त की गई है।

४. जिन सिध्द अल्प और अजिन सिध्द उनसे असंख्यगुणा है। अतीर्थ सिध्द अल्प; तिर्थ सिध्द अनंत गुणा है। गृहस्थलिंग सिध्द अल्प, उनसे अन्यलिंग सिध्द संख्यात गुणा, उनसे स्वलिंग सिध्द संख्यात गुना है। स्वयंबुध्द सिध्द अल्प, इनसे प्रत्येकबुध्द सिध्द संख्यात गुना, उनसे बुध्दबोधित सिध्द संख्यात गुना। अनेक सिध्द अल्प और एकसिध्द उनसे संख्यात गुना। इस तरह मोक्ष तत्व जानने योग्य और उस दिशा में आगे बढकर आत्मकल्याण साध सके ऐसा पुरुषार्थ करने योग्य है।

५. प्रभुजब शालिशिर्ष गाँव पहुँचे तब वहा अत्यंत ठंड थी। उस समय प्रभु कायोत्सर्ग में रहे। तब त्रिपृष्ट वासुदेव के भव में अपमानित हुई विजयवती नाम की रानी मरकर कई भव घूमकर कटपूतना व्यंतरी हुई थी, उसने तापस का रूप धारण करके अपनी जटा में से बर्फ जैसा ठंडा पानी प्रभु के उपर डालने लगी कडकडाती इस माघ मास की ठंडी असमे यह शित उपसर्ग प्रभुपर हुआ। फिर भी प्रभुको ध्यान में निश्चल देखकर कटपूतना ने प्रभु से क्षमा माँगकर, नमस्कार कर अपने स्थान चली गई। शितउपसर्ग को सहते हुए प्रभु को लोकावधिज्ञान उत्पन्न हुआ।